ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 4 अंक : 5 जून - जुलाई 2014 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

गुरू पूर्णिमा	डा. महेश पारासर	2
दाम्पत्य सुख एंव वास्तु	डा. रचना के भारद्वाज	4
मछली की तरह दिशा बदल लेते है मीन लग्न वाल	डा. शोनू मेहरोत्रा	5
निर्जला एकादशी व्रत	प. ब्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी	6
तंत्र मंत्र यंत्र और टोटके	पवन कुमार मेहरोत्रा	7
शीघ्र विवाह के लिए ज्योतिषीय उपाय	पं. अजय दत्ता	8
ज्ञान मुद्रा	विष्णु पाराशर	8
गणपति आराधना से पूर्ण.....	डॉ. लक्ष्मी नारायण शर्मा 'मयंक'	9
सब तें सेवक धरमु कठोरा	सुरेश अग्रवाल	10
मंत्र एंव यंत्र की महत्वता	श्री भगवान पाराशर	11
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	12–13
घर की शांति और संपन्नता में वास्तु की भूमिका	पूनम दत्त	14
सज्जनों की बुद्वि	विजय शर्मा	15
पूजा – सामिग्री		20

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार के विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रार्थित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा Aydee Offset 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर FF-6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। **RNI No. UPHIN/2010/44791**

''प्रधान संपादक की कलम से''

डा. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

बन्दऊ गुरु पद पदुम परागा
सुरुचि सुबास सरस अनुरागा

आज पूरे देश में गुरू पूर्णिमा मनाई जा रही है। भारतीय अध्यात्म में गुरू का बहुत महत्व है और बचपन से ही हर माता पिता अपने बच्चे को गुरू का सम्मान करने का संस्कार इस तरह देते है। कि वह उसे कभी भूल ही नहीं सकता। मुख्य बात यह है **कि गुरू कौन है?**

दरअसल सांसारिक विषयों का ज्ञान देने वाला शिक्षक होता है पर जो तत्व ज्ञान से अवगत कराये, उसे ही गुरू कहा जाता है। यह तत्वज्ञान श्री गीता में वर्णित है। इस ज्ञान को अध्ययन या श्रवण कर प्राप्त किया जा सकता है। अब सवाल यह है कि अगर कोई हमें श्रीगीता का ज्ञान देता है तो हम क्या उसे गुरू मान लें? नही! पहले उसे गुरू मानकर श्री गीता का ज्ञान प्राप्त करें फिर स्वंय ही उसका अध्ययन करें और देखें कि आपको जो ज्ञान गुरू ने दिया और वह वैसा ही है कि नहीं। अगर दोनों में साम्यता हो तो अपने गुरू को प्रणाम करें और फिर चल पड़े अपनी राह पर।

भगवान श्रीकृष्ण ने श्रीगीता में गुरू की सेवा को बहुत महत्व दिया है पर उनका आशय यही है कि जब आप उनसे शिक्षा लेते हैं तो उनकी दैहिक सेवा कर उसकी कीमत चुकायें। जहां तक श्रीकृष्ण के जीवन चरित्र का सवाल हैं तो इसका उल्लेख कहीं नही मिलता कि उन्होंने अपने गुरू से ज्ञान प्राप्त कर हर वर्ष उनके यहां चक्कर लगाये।

गुरू तो वह भी हो सकता है जो आपसे कुछ क्षण मिले और श्रीगीता पढ़ने के लिये प्रेरित करे। उसके बाद अगर आपको तत्वज्ञान की अनुभूति हो तो आप उस गुरू के पास जाकर उसकी एक बार सेवा अवश्य करें। हम यहां स्पष्ट करें कि तत्वज्ञान जीवन सहजता पूर्ण ढंग से व्यतीत करने के लिये अत्यंत आवश्यक है और वह केवल श्रीगीता में संपूर्ण रूप से कहा गया है। श्रीगीता से बाहर कोई तत्व ज्ञान नहीं है। इससे भी आगे बात करें तो श्रीगीता के बाहर कोई अन्य विज्ञान भी नहीं है।

इस देश के अधिकतर गुरू अपने शिष्यों को कथायें सुनाते हैं पर उनकी वाणी तत्वज्ञान से कोसों दूर रहती हैं। सच तो यह है कि वह कथाप्रवचक है कि ज्ञानी महापुरूष। यह लोग गुरू की सेवा का संदेश इस तरह देते हैं जैसे कि हैंण्ड पंप चलाकर अपने लिये पानी निकाल रहे हैं। कई बार कथा में यह गुरू की सेवा की बात कहते हैं।

सच बात तो यह है गुरूओं को प्रेम करने वाले अनेक निष्कपट भक्त हैं पर उनके निकट केवल ढोंगी चेलों का झुंड रहता हैं। आप किसी भी आश्रम में जाकर देखें वहाँ गुरूओं के खास चेले कभी कथा कीर्तन सुनते नहीं मिलेंगे। कहीं वह उस दौरान व्यवस्था बनाते हुए लोगों पर अपना प्रभाव जमाते नजर आयेंगे या इधर–उधर फोन करते हुए ऐसे दिखायेंगे जैसे कि वह गुरू की सेवा कर रहे हों। कबीरदास जी ने ऐसे ही लोगों के लिये कहा है कि

जाका गुरु आंधरा चेला खरा निरंध। अन्धे को अन्धा मिला, पड़ा काल के फंद।

जहां गुरू ज्ञान से अंधा होगा वहां चेला तो उससे भी बड़ा साबित होगा। दोनों अंधे मिलकर काल के फंदे में फंस जाते हैं।

बहुत कटु सत्य यह है कि भारतीय अध्यात्मिक ज्ञान एक स्वर्णिम शब्दों का बड़ा भारी भंडार है जिसकी रोशनी में ही यह ढोंगी संत चमक रहे हैं। इसलिये ही भारत में आध्यात्म एक व्यापार बन गया है। श्रीगीता के ज्ञान को एक तरह से ढंकने के लिये यह संत लोग लोगों को सकाम भक्ति के लिये प्रेरित करते है। भगवान श्रीगीता में भगवान ने अंधविश्वासों से परे होकर निराकर ईश्वर की उपासना का संदेश दिया और प्रेत या पितरों की पूजा को एक तरह से निषिद्ध किया है परंतु कथित रूप से श्री कृष्ण के भक्त हर मौके पर हर तरह की देवता की पूजा करने लग जाते हैं। गुरू पूर्णिमा पर इन गुरूओं की तो पितृ पक्ष में पितरों को तर्पण देते है।

मुक्ति क्या है? अधिकतर लोग यह कहते हैं कि मुक्ति इस जीवन के बाद दूसरा जीवन न मिलने से है। यह गलत है। मुक्ति का आशय है कि इस संसार में रहकर मोह माया से मुक्ति, ताकि मृत्यु के समय उसका मोह सताये नहीं। सकाम भक्ति में ढेर सारे बंधन हैं और वही तनाव का कारण बनते हैं। निष्काम भक्ति और निष्प्रयोजन दया ऐसे ब्रह्मास्त्र हैं जिनसे आप जीवन भर मुक्त भाव से विचरण करते हैं और यही कहलाता है मोक्ष। अपने गुरू या पितरों का हर वर्ष दैहिक और मानसिक रूप से चक्कर लगाना भी एक

सांसरिक बंधन है। यह बंधन कभी सुख का कारण नहीं होता। इस संसार में देह धारण की है तो अपनी इंद्रियों को कार्य करने से रोकना तामस वृत्ति है और उन पर नियंत्रण करना ही सात्विकता है। माया से भागकर कहीं जाना नहीं है बल्कि उस पर सवारी करनी है न कि उसे अपने ऊपर सवार बनाना है। अपनी देह में ही ईश्वर है अन्य किसी की देह को मत मानो। जब तुम अपनी देह में ईश्वर देखोगे तब तुम दूसरों के कल्याण के लिये प्रवृत्त होगे और यही होता है मोक्ष।

इस लेखक के गुरू एक पत्रकार थे। वह शराब आदि का सेवन भी करते थे। आध्यात्मिक ज्ञान तो कभी उन्होंने प्राप्त नहीं किया पर उनके ह्रदय में अपनी देह को लेकर कोई मोह नहीं था। वह एक तरह से निर्मोही जीवन जीते थे। उन्होने ही इस लेखक को जीवन में दृढता से चलने की शिक्षा दी। माता पिता तथा आध्यात्मिक ग्रंथो से ज्ञान तो पहले ही मिला था। उन गुरू जी ने जो दृढता का भाव प्रदान किया उसके लिये उनको नमन करता हूं। अंर्तजाल पर इस लेखक को पढ़ने वाले शायद नहीं जानते होंगे कि उन्होने अपने तय किये हुए रास्ते पर चलने के लिये जो दृढता भाव रखने की प्रेरणा दी थी वही यहां तक ले आयी। वह गुरू इस लेखक के अल्लहड़पन से बहुत प्रभावित थे और यही कारण है कि वह उस समय भी इस तरह के चिंतन लिखवाते थे, जो बाद में इस लेखक की पहचान बने। उन्हीं गुरूजी को समर्पित यह रचना।

अमृत वचन

जो सम्प्रदाय के घेरे में बन्द है वे धर्म के रहस्यों को नही समझ सकते। वे ही धर्म के नाम पर घृणा, वैमनस्य, कटुता फैलाते हैं।

❋❋❋

ठोकर खाकर संभल जाना जागरूकता की निशानी है।

पाठकों के पत्र

परम् श्रद्धेय पारासर जी,

मैं आपकी पत्रिका का विगत 4 वर्षो से अध्ययन कर रहा हूँ। पत्रिका काफी रूचिकर व ज्ञान वर्धक है।

मेरा आपसे निवेदन है कि पत्रिका में यंत्र व मंत्र के ऊपर लेख अवश्य छापें, जिससे यंत्र व मंत्र के बारे में पता चल सके।

जितेन्द्र सिंह, आगरा केंट।

आदरणीय पारासर जी,

भविष्य निर्णय का अप्रैल–मई का अंक सही समय से प्राप्त हुआ। पत्रिका के सभी लेख अच्छे थे इससे पिछला विशेषांक भी बहुत अच्छा था।

ऐ. के. अग्रवाल, मथुरा।

आपके प्रश्नों के समाधान

प्रश्न 1. मेरा विभागीय विवाद चल रहा है। कब तक खत्म होगा? **माता प्रसाद, बुलंदशहर**

उत्तर– आपकी कुण्डली में शनि नीच का है तथा उसी की महादशा चल रही है। शनि के तांत्रोक्त मंत्रो का जाप करें, तथा शनि शांति करायें। उपाय करके जुलाई 2015 के बाद फैसला आपके पक्ष में हो सकता है।

प्रश्न 2. मेरी कुण्डली के हिसाब से मेरा मकान कब तक बनेगा? **शिवानी सिंह, आगरा**

उत्तर– चतुर्थ भाव की महादशा चल रही है। जुलाई 2015 से जून 2016 तक आपका मकान अवश्य बनेगा।

डा.महेश पारासर

आपकी वास्तु समस्या का समाधान

समस्या– 1. मेरे घर में पैसा बिल्कुल नहीं रूकता। नक्शा देखकर उपाय बतायें।

अमित बंसल, फिरोजाबाद

समस्या– आपके घर में पानी की बोरिंग दक्षिण–पश्चिम दिशा में हैं, जिसकी बजह से व्यय बढ़े रहते हैं। भविष्य में इसे पूर्व उत्तर दिशा में स्थानान्तरित करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

समस्या– 2. मेरे घर में नकारात्मक ऊर्जा बहुत अधिक है। उसे दूर करने के उपाय बतायें ।

जी. के. बंसल, आगरा

समस्या– सप्ताह में एक बार अपने घर में नमकयुक्त पानी का पौंछा लगायें। सुबह शाम गायत्री मंत्र का जाप करें तथा लोबान अगरबत्ती जलायें। नकारात्मक ऊर्जा कम होगी।

पं. अजय दत्ता
मो. 9319221203

दाम्पत्य सुख एंव वास्तु

डा. रचना के भारद्वाज
वास्तु शास्त्राचार्य, ज्योतिष प्रभाकर, अंक विशारद
नई दिल्ली

हस्तरेखाओं के साथ ही साथ आप जिस घर में रह रहे हैं उस घर के वास्तु का भी आपके दाम्पत्य जीवन पर प्रभाव पड़ता है। यदि मकान वास्तुसम्मत बना हुआ है तो दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता है परन्तु यदि मकान वास्तुशास्त्र के अनुरूप नहीं बना हुआ है तो सकता है कि आपके मकान में कुछ निर्माण गलत बन गया हो व उससे दाम्पत्य जीवन प्रभावित हो रहा हो। निम्नलिखित बिन्दुओं को ध्यान में रखना नितान्त आवश्यक है–

1. यदि मकान के दक्षिण दिशा में या दक्षिण–पश्चिमी भाग में वाटर टैंक (कुण्ड या पानी की टंकी) है तो इसका मकान की स्त्रियों पर कुप्रभाव पड़ता है। अतः उसे हटवा कर ईशान कोण या मकान के उत्तरी क्षेत्र में बनवा लेना चाहिए।

2. अगर मकान का मुख्य द्वार दक्षिण–पश्चिम दिशा में हो तो गृहलक्ष्मी तनावयुक्त रहती है।

3. यदि भवन का दक्षिणी पश्चिमी कोना कटा हुआ है तो घर में बार–बार बीमारियां आती हैं। यदि इस क्षेत्र में कोई तहखाना हो तो उसका भी कुप्रभाव पड़ता है। दक्षिण पश्चिम भाग पर मार्ग प्रहार भी गलत रहता है। इनका दाम्पत्य जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव रहता है। अतः इन कमियों को सुधार कर दाम्पत्य जीवन में मधुरता लाई जा सकती है।

4. भवन के उत्तरी पूर्वी भाग में शौचालय होने पर आर्थिक संकट व संतान सुख में कमी आती है। कई बार तो पति–पत्नि में तलाक तक की स्थिति आ जाती है या मुकदमेबाजी से धनहानि संभव है। इस क्षेत्र में रसोई घर, ऊँचा चबूतरा या कोण कटा हुआ हो तो भी दाम्पत्य सुख नहीं मिल पाता है। इस क्षेत्र में पूजा घर, पानी का कुण्ड अच्छा रहता है। यह कोण अगर बढ़ा हुआ है तो शुंभ रहता है। इस कोण पर मार्ग प्रहार भी अच्छा रहता है।

5. भवन के दक्षिणी पूर्वी कोने में यदि पानी का कुण्ड हो तो भवन के स्वामी की द्वितीय संतान दुःखी रहती है, इसे हटाकर इस जगह पर रसोई घर बनाया जा सकता है।

6. भवन के दक्षिण क्षेत्र में अधिक खाली जगह नहीं होनी चाहिए। यदि खाली जगह हो तो इसे उत्तर पूर्व दिशा में छोड़ना चाहिए।

7. भवन के मुख्य द्वार पर यदि कोई अवरोध है जैसे पेड़, बिजली टेलीफोन का खंभा आदि तो दाम्पत्य जीवन में मुश्किलें आती हैं। यें अवरोध हटा कर या पाकवा मिरर मुख्य द्वार पर लगाकर इस अवरोध को दूर किया जा सकता है।

8. भवन में दक्षिणी पश्चिमी कोने को भारी व ऊँचा रखा जाना चाहिए। इस क्षेत्र में अनुपयोगी सामान रखा जा सकता है।

9. घर का मुख्य द्वार अन्य सभी दरवाजों से बड़ा होना चाहिए। दरवाजा वर्गाकार नहीं होना चाहिए।

आज के समय में सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए अच्छी भाग्य रेखा व अच्छी मस्तिष्क रेखा होना आवश्यक है। वर्तमान अर्थ

प्रधान युग में यदि काम नहीं तो आदमी का क्या महत्व रह जाता है। दाम्पत्य जीवन कैसे अच्छा रह सकता हैं। अतः भाग्य रेखा का भी अच्छा होना आवश्यक है। यदि जातक का दाम्पत्य जीवन कष्टकारक चल रहा है, जीवन साथी से यदि आप संतुष्ट नही है तो इस लेख से यह स्पष्ट हो जाता है कि कहाँ कमी है? जयोतिष के माध्यम से परेशानियों के कारण को पहचान कर इन कष्टों में न्यूनता लाई जा सकती है।

❋❋❋

हमारे यहाँ रत्नों को लैब से टेस्टेड **(Lab Certified)** कराकर उपलब्ध कराये जाते हैं। रत्नों की **100%** शुद्धता के लिये रत्न के साथ उसकी शुद्धता का सर्टीफिकेट दिया जाता है।

Consult any problems: Health, Wealth, Marriage, Business, Education, Family Relations, Jobs,Enemies & Property

Remedies by Stones, Yantra, Mantra & Pooja

Horoscope, Match Making & Varshphal

भविष्य दर्शन®

Dr. Rachna K Bhardwaj

Consultant of Astrology & Vastu

Flat No. 302, S-Tower, Zodiac Amrapali, Near Prateek Laural Appt. Sector-120, Noida, Ph. 9717195756

H.O.- Dr. Mahesh Parasar, Opp. Shah Cinema, Agra Ph. 0-0562-2525262,2856666

❋❋❋

मछली की तरह दिशा बदल लेते है मीन लग्न वाले

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता ;अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान

हम लोग पिछले ग्यारह सप्ताह से लगातार क्रमबद्ध तरीके से सभी लग्नों के विषय में विस्तार से चर्चा कर रहे हैं। आज हम लोग अंतिम और 12 लग्न मीन के बारे में बात करेंगें। मीन कुंडली में बारहवें स्थान में पड़नें वाली राशि है। यह द्विस्वभाव की स्त्री राशि है। इसके कारण ऐसे जातकों का स्वभाव कभी जटिल, तो कभी सरल होता है। इसे सौम्य राशि भी कहते है। यह राशि पूर्वाभाद्रप्रद के एक चरण उत्तरा भाद्रपद के चार चरण और रेवती नक्षत्र के चार चरण से मिलकर बनी है। मीन लग्न का स्वामी बृहस्पति होता है इसलिए गुरू मीन लग्नवालों को हो जाता है। गुरू को दो राशियों का आधिपत्य प्राप्त है, पहली धनु और दूसरी मीन का अर्थ होता है मछली मीन लग्न में जन्मे जातकों का स्वभाव और हरकतें मछली की तरह होती है। ऐसा जातक पित्र प्रधान होता है। मीन वाले जातक को जल में बहुत अच्छा लगता है। वह जल के अत्यधिक प्रयोग में रूचि लेता है।

मीन राशि के जातकों में उच्च कोटि के भोग और ऐश्वर्य के जीवन जीने की प्रबल इच्छा रहती है। मीन लग्न वाला जातक बहुआयमी व्यक्त्वि का धनी होता है। मीन का जातक शारीरिक रूप से भले ही खाली हो, आराम कर रहा हो, लेकिन दिमागी रूप से बहुत व्यस्त रहता है। मीन वाला हमेशा दिमागी रूप से फुर्तीला होता है। इसलिए देखा गया है कि ऐसे जातकों का सामान्य ज्ञान बहुत अच्छा होता है। ये भौतिक सुख की ओर अधिक प्रयासरत रहते हैं। इन्हें बहुत धन प्राप्त करने की इच्छा होती है। इस लग्न वाले को यदि अवसर मिल जाय तो वह हर हथकंडे से उसका लाभ उठाता है।

यह बहुत कड़ी मेहनत नहीं कर पाते है। हाँ, दिमागी रूप से चाहे जितनी मेहनत करवा लीजिए। साहस और भीरूता का मिश्रित व्यवहार परिलक्षित होता है। मीन वालों को मित्रों का सुख बहुत प्राप्त होता है। इन्हें मित्र कमी धोखा नहीं देते, भले ही वह मित्र को धोखा दे दे। मीन लग्न की स्त्री जातक बहुत गुणी और सुंदर होती है, और इन्हें पुत्र पौत्र का सुख प्राप्त होता है।

मीन लग्न का स्वामी गुरू मूल त्रिकोण के पंचम भाव में जाकर उच्च का होता है। मीन लग्न वाले जातकों के लिए आत्मा और कर्म दोनों के स्वामी गुरू होते हैं। इस लिए मीन लग्न वालों को हमेशा ध्यान रखना चाहिये कि अनजाने में भी उनसे अपने शिक्षक का निरादर न हो जाए। मीन लग्न वालों को वृद्धों की सेवा करने की इच्छा हमेशा रखनी चाहिए। यह सब करने से मीन वाले को शांति और आत्मबल में वृद्धि होगी। मीन वालों को कभी धन की ओर ज्यादा ध्यान नहीं देना चाहिए।

मीन वालों के लिए शुक्र कभी अच्छे फल नहीं देता है। अगर कुंडली में शुक्र अच्छा या उच्च का हो जाए तो जातक शास्त्रीय संगीत में बहुत रूचि लेता है। इस लग्न वालों को आयु के साथ साथ शक्कर की मात्रा घटाते चलना चाहिए क्यों कि इस लग्नवाले को मधुमेह रोग होने के आसार सर्वाधिक होते है। मीन लग्न वालों की कन्याएं बहुत सुशील और गुणवान होती हैं। मीन वाला जातक घर से निकलता है कहीं के लिए और पँहुच कही जाता है। वह अपनी दिशा बदलने में तनिक भी देरी नहीं करता। मीन जातकों के भाग्य का स्वामी मंगल होता है। इसलिए भाग्य और कोण में वृद्धि के लिए हनुमान जी की उपासना करनी चाहिए। प्रायः देखा गया है मीन वाले व्यक्ति की सत्ता के विपक्षियों के साथ ज्यादा बनती है।

यह सरकार का आलोचक होता है। शनि इन लोगों के लिए आय व व्यय का स्वामी है। यदि कुंडली में रानि की स्थिति आय की ओर से अच्छी बने तो यह अधिक आय कराते है और यदि व्यय की ओर स्थिति ज्यादा मजबूत बनती है। तो वह खर्च के साथ साथ दुर्घटना भी कराती है। इसलिए मीन वालों को कुंडली दिखाकर ही नीलम रत्न धारण करना चाहिए अन्यथा नुकसान भी हो सकता है। इन लोगों के लिए कन्या, कर्क, वृश्चिक तथा धनु अच्छे मित्र होते है। मीन लग्न वाला दिमागी रूप से बहुत व्यस्त रहता है। अवसर का लाभ उठाने के लिए हर हथकंडे अपनाता है।

❋❋❋

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

!! निर्जला एकादशी व्रत !!

पं. ब्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी
भागवताचार्य

यह व्रत ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी को किया जाता है। इसका नाम निर्जला एकादशी है, अतः नाम के अनुरूप जल का परित्याग कर इसका व्रत किया जाय तो स्वर्गादि के सिवाय आयु और आरोग्यवृद्धि को भी देने वाला है। व्यास जी के वचनानुसार यह यथार्थ सत्य है कि अधिमास (मल मास) सहित एक वर्ष की छब्बीस एकादशियों में से मात्र एक निर्जला एकादशी का व्रत करने से ही सम्पूर्ण एकादशियों का फल प्राप्त हो जाता है। निर्जला व्रत करने वाला अपवित्र अवस्था के आचमन के सिवा बिन्दुमात्र जल भी ग्रहण न करे–

वृषस्थे मिथुनस्थेऽर्के शुक्ला ह्येयकादशी भवेत्।
ज्येष्ठे मासि प्रयत्नेन सोपोष्या जल वर्जिता।।
स्नाने याचमने चैव वर्जयेन्नोदकं बुधः।
संवत्सरस्य या मध्ये एकादश्यो भवन्त्युत।।
तासां फलमवाप्नोति अत्र मे नास्ति संशयः।

यदि किसी प्रकार जल उपयोग में ले लिया जाय तो उससे व्रत भंग हो जाता है। सम्पूर्ण इन्द्रियों को दृढता पूर्वक भोगों से विरक्त कर सर्वान्तर्यामी श्री हरि के चरणों का चिन्तन करते हुए नियमपूर्वक निर्जल उपवास करके द्वादशी को स्नान करें और सामर्थ्य के अनुसार सुवर्ण और जलयुक्त कलश देकर भोजन करें तो सम्पूर्ण तीर्थो में जाकर स्नान दानादि करने के समान फल मिलता है।

एक समय बहुभोजी भीमसेन ने पितामह व्यास जी से पूछा हे पितामह भ्राता युधिष्ठिर, माता कुन्ती, द्रोपदी, अर्जुन, नकुल और सहदेव आदि एकादशी के दान व्रत करते हैं और मुझसे एकादशी के दिन अन्न खाने को मना करते हैं। मैं उनसे कहता हूँ कि भाई मैं भक्तिपूर्वक भगवान् की पूजा कर सकता हूँ, परन्तु मैं एकादशी के दिन भूखा नहीं रह सकता।

इस पर व्यास जी बोले– हे भीमसेन यदि तुम नरक को बुरा और स्वर्ग को अच्छा समझते हो, तो प्रत्येक माह की दोनों एकादशियों को अन्न न खाया करो।

इस पर भीमसेन बोला– हे पितामह! मैं आपसे प्रथम कह चुका हूँ कि मैं एक दिन एक समय भी भोजन किये बिना नहीं रह सकता, तो फिर मेरे लिये पूरे दिन का उपवास करना बहुत ही कठिन है। यदि मैं प्रयत्न करूँ तो एक व्रत अवश्य कर सकता हूँ। अतः आप मुझे कोई एक व्रत बतलाइये, जिससे मुझे स्वर्ग की प्राप्ति हो।

श्री व्यासजी बोले हे वायुपुत्र! बड़े–बड़े ऋषि और महर्षियों ने बहुत से शास्त्र आदि बनाये हैं और बताया है कि मनुष्यों को दोनो पक्षों की एकादशियों का व्रत करना चाहिये। इससे उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

श्री व्यासजी के वचनों को सुनकर भीमसैन नर्क में जाने के कारण अत्यन्त भयभीत हुए और लता के समान काँपने लगे। वह बोले हे पितामह। अब मैं क्या करूँ क्योकि मुझसे व्रत नहीं हो सकता। अतः आप मुझे कोई एक ही व्रत बतलाइये, जिससे मेरी मुक्ति हो जाये।

इस पर श्री व्यास जी बोले हे भीमसेन! वृष और मिथुन संक्रान्ति के मध्य में ज्येष्ठ माह की शुक्लपक्ष की एकादशी होती है। उसका निर्जला व्रत करना चाहिये। इस एकादशी के व्रत में स्नान और आचमन में जल वर्जित नहीं है लेकिन आचमन में 3 माशे जल से अधिक जल नहीं लेना चाहिये। इस आचमन से शरीर की शुद्धि हो जाती है। आचमन में 7 माशे से अधिक जल मद्यपान के समान है। इस दिन भोजन करने से व्रत नष्ट हो जाता है।

यदि सूर्योदय से सूर्योदय तक मनुष्य जलपान न करे तो उसे बारह एकादशी के फल की प्राप्ति होती है। द्वादशी के

शेष पेज 16 **पर**.....

ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र सीखिये
प्रमाण पत्र अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.) नई दिल्ली द्वारा
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़,
आगरा। फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719666777
ई मेल : mail@bhavishydarshan.in

तंत्र मंत्र यंत्र और टोटके

पवन कुमार मेहरोत्रा
ज्योतिषप्रभाकर एवं अंक विशारद
नज़र दोष विशेषज्ञ

तंत्र मंत्र टोटके आदि काल से मानव के साथ जुड़े हुए हैं। भय, बीमारी, भूत–प्रेत, संतान संबधी समस्याऐं तथा वैवाहिक विषमताऐं जैसी समस्याऐं अथवा धन संपत्ति, समाज में मान सम्मान, घर में सुख शांति, युद्ध, मुकदमें में विजय की अभिलाषाऐं भी अनंत काल से व्यक्ति के विषाद–हर्ष का कारण रही हैं। अतः मानव के अभ्युदय के साथ ही पूर्ण सफलता उन्हीं व्यक्तियों को मिलती देखी गई हैं, जो लौकिक एंव आध्यात्मिक दोनों क्षेत्रों में प्रयास करते है।

धर्म शास्त्रों तथा प्राचीन ग्रथों में तंत्र मंत्र और टोटकों के बारे में काफी जानकारी दी गई है। ये सभी शास्त्र समस्त तथा विद्वानों द्वारा परीक्षा किये हुये हैं। फिर भी इनके करने से मिलने वाली सफलता में मानव के प्रयास, दृढ़ विश्वास का भी बड़ा महत्व रहता है। पराविज्ञान/ज्योतिष, रमल तंत्र मंत्र टोटके तथा गोचर ग्रह स्थिति आदि परम्परागत प्राचीन भारतीय धरोहर हैं। इनमें यंत्र, मंत्र एंव तंत्र को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है।

मंत्र तंत्र आकृति विज्ञान पर आधारित हैं। आम भाषा में इन्हें ताबीज या गंडा भी कह सकते हैं। धातुओं पर बनी विभिन्न आकृतियाँ रेखा गणित के किसी विशेष सिद्धांत पर बनी होती हैं या भोज पत्र पर बनायी जाती हैं। उन्हें शुभ समय पर भिन्न तरीकों से भिन्न पेड़ों की शाखाओं की कलम से अपने उद्देश्य प्राप्ति हेतु बनाया जाता है।

टोटके एंव यंत्र बनाने में तिथिवार नक्षत्र का विचार किया जाता है। सभी जानते हैं कि ग्रह रश्मियों के प्रभाव से ब्रह्मांड में जो क्रियायें प्रतिक्रियाऐं होती हैं, वे मनुष्य के शरीर उसकी चेतना, बुद्धि आदि संवेगों को प्रभावित करती हैं तथा इससे मनुष्य प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। अतः इस तिथि, वार नक्षत्रों से बनने वाले सर्वार्थ सिद्धि आदि योगों में व्यक्ति को कार्य करने से वांछित सफलता मिलती है तथा इनसे बनने वाले कुयोगों जैसे यमघंटक, भद्रा, राहुकाल में कार्य करने से असफलता भी मिल सकती है या अनेक विघ्न–बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है।

किसी को नुकसान पहंचाने हेतु तंत्र, मंत्र टोटकों को काम में नहीं लाना चाहिये। परहिताय एंव बिना किसी की नुकसान पहुँचाए, स्वयं को लाभान्वित करने के लिए इनका उपयोग करना आध्यात्मिक पक्ष है।

गृह प्रवेश से पहले तुलसी का पौधा, अपने इष्ट देव की तस्वीर, पानी से भरा कलश एवं गाय को प्रवेश कराना अति शुभकारी होता है इससे घर में सुख–शांति आती है और सम्पन्नता बढ़ती है।

भवन की नींव भरते समय शहद से भरा बर्तन रख दे। इससे जातक आजीवन खतरों से मुक्त रहेगा।

एक बार भवन निर्माण का कार्य प्रारम्भ हो जाए तो बीच में उसे रोंकें नही अन्यथा पूरे मकान में राहू का वास हो जाता है।

भवन निर्माण कराने से पूर्व मकान की जमीन पर ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए।

भवन निर्माण करते समय जमीन में से या जमीन पर चीटियां निकलें, तो उन चीटियों को शक्कर एंव आटा मिलाकर खिलायें।

भवन के मालिक की जन्म कुण्डली में पांचवे घर में केतु हो, तो भवन निर्माण के पहले केतु का दान अवश्य करें।

एक घुपिया में गाय की गोबरी रखें, उसमें कपूर डालें तथा प्रज्जवलित करके उस पर धूप एवं गुगल डालें, 3 छोटे चम्मच घी डालें एंव इष्ट देवता का ध्यान करें। सभी दिशाओं में घुमाऐं। हाथ में घंटी बजाते रहें। यह करने से भी वास्तु दोष का निवारण होता है।

घर में सुबह व शाम महामृत्युंजय मंत्र तथा गायत्री मंत्र का जाप करें एंव भगवान, वास्तु देवता, कुत्ता, गाय तथा भिखारी के लिए थाली निकालें। ऐसा करने से भी वास्तु दोष कम होता है। स्वास्तिक यंत्र घर के मुख्यद्वार पर लगायें। जिससे आने वाले और रहने वालों में मित्रता रहेगी तथा वास्तु दोष कम होगा।

भोजन बनने के बाद थाली से थोड़ा भोजन निकालें, तुलसी की पत्ती रखें, अग्नि को भोग लगायें, फिर एक भाग कुत्ते, एक गाय, एक पक्षी को दें एवं परिवार में श्राद्ध अवश्य करें। दीपक जलायें।

शेष पेज 19 **पर**.....

शीघ्र विवाह के लिए ज्योतिषीय उपाय

पं. अजय दत्ता
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्शदाता

1. पुरूष जातक शुक्रवार के दिन प्रातः 9 से 11 के बीच शुद्ध व प्राण प्रतिष्ठित हीरा या जरकन जड़ा हुआ शुक्र यंत्र धारण करके 28 शुक्रवार उपवास करें एंव प्रत्येक शुक्रवार को दो घृत दीपक देवी मंदिर या नदी में तैरा दें। शुक्र यंत्र धारण करने से जातक को स्वप्न दोष, नपुंसकता, रात्रि में नीद न आना आदि दोष भी दूर होगा।

2. स्त्री जातिका गुरूवार के दिन प्रातः शुद्ध जल से स्नान करके शुद्ध प्राण प्रतिष्ठित पुखराज या पीताम्बरी जड़ा हुआ गुरू यंत्र धारण करके 64 गुरूवार उपवास रखे एंव प्रत्येक शुक्रवार को दो घृत दीपक देवी मंदिर या नदी में जलायें।

3. पुरूष जातक नवरात्रों में प्रतिपदा से लेकर नवमी पर्यन्त पूर्ण विधि–विधान से संकल्प लेकर दुर्गा प्रतिमा या चित्र के सामने निम्न मंत्र का कुल 44000 जाप करें। ऊं पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृतानुसारिणीम, तारिणी, दुर्ग संसार सागरस्य कुलोद्भवाम्।

4. स्त्री जातिका अग्रहण नवरात्रों में प्रतिपदा से लेकर नवमी पर्यन्त दुर्गा जी की प्रतिमा या चित्र के सामने निम्न मंत्र का 44000 जप स्फटिक माला पर करें।

कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि
नन्द गोप सुंत देवि पतिं में कुरू ते नमः।

5. एक हल्दी की गांठ पीले वस्त्र में लपेट कर तकिए के नीचे रखें एंव हल्दी का तिलक लगावें।

6. सोने के कमरे के दरवाजे के सामने सिर या पांव नही होना चाहिए और अच्छे वर या कन्या को आकर्षित करने के लिए सिर के सामने सुन्दर स्फटिक बाल लटकाना चाहिए।

7. नैऋत्य कोण विवाह लग्न का होता है। यह कोना मकान में जहां होता है। वहां कुंवारे लड़के–लड़की को रखना चाहिए ताकि शीघ्र विवाह हो।

8. किसी योग्य ज्योतिषी से कुंडली का विश्लेषण करावें। जो ग्रह विवाह में वाधक बन रहा हो उसका समुचित उपाय करें। ❋❋❋

ज्ञान मुद्रा

विष्णु पाराशर
ज्योतिष शास्त्राचार्य, कर्मकाण्ड विशेषज्ञ

प्रपन्न पारिजाताय तोत्रवे त्रे पाणये।
ज्ञान मुद्राय कृष्णाय गीतामृत दुहे नमः।।

श्लोकानुसार भगवान श्री कृष्ण जी ने गीता का उपदेश ज्ञान मुद्रा को लगाकर दिया था।

मुद्रा विज्ञान में ज्ञान मुद्रा का विशेष स्थान है। यह मुद्रा गायत्री मुद्राओं मे से एक मुद्रा है।

विधि– अंगुठे को तर्जनी अंगुली के सिरे पर लगा दें। शेष तीनों अंगुलियाँ सीधे रखें दोनो हाथों से यह क्रिया करके सिंद्धासन, सुखासन, पदमासन आदि आसनों में से किसी में भी बैठ कर संध्या काल प्रातः व साँय काल 15 से 20 मिनट तक लगा सकते है। सुविधा के अनुसार चलते, फिरते, पढ़ते समय भी लगाया जा सकता है। पूर्ण ज्ञान मुद्रा हेतु सीधे हाथ को इसी मुद्रा से हृदय पर रखा जाता है तथा उल्टा हाथ नीचे घुटने पर ही रहता है। पूर्ण ज्ञान मुद्रा से इस मुद्रा की शक्ति बढ़ जाती है।

लाभ– इस मुद्रा को लगाने से ज्ञान वृद्धि होती है, मस्तिष्क का विकास होता है, स्मरण शक्ति बढ़ती है। पढ़ने में मन लगता है, एकाग्रता आती है। सिरदर्द व अनिद्रा के लिए लाभकारी है। आध्यात्म शक्ति का विकास व क्रोध का नाश होता है। स्वभाव में परिवर्तन होता है, मस्तिष्क के स्नायु मजबूत होते हैं। उच्च रक्तचाप निंयत्रित होता है तथा अधिक अभ्यास हो जाने पर आत्मविश्वास और आत्मशक्ति बढ़ती है।

इस मुद्रा को लगाने से वायुतत्व व अग्नितत्व का मिलान होता है अतः अधिक गर्म व अधिक ठण्डा पेय न लें, सात्विक भोजन करें, मादक द्रव्यों का प्रयोग न करें। मुद्राओं का लम्बे समय तक अभ्यास करें जिससे आपको उनकी शक्ति का आभास होगा। ❋❋❋

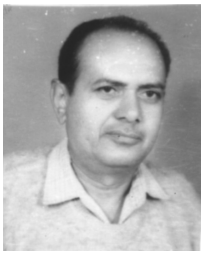

गणपति आराधना से पूर्ण करें अपने मनोरथ

डॉ. लक्ष्मी नारायण शर्मा 'मयंक'

मुनि अनुशासन गनपतिहि, पूजेउ संभु भवानि।
कोउ सुनि संसय करै जनि, सुर अनादि जिय जानि।।

अनादिकाल से ही गणेशजी हर कार्य में प्रथम पूज्य है। सृष्टि के प्रारंभ से ही भगवान गणपति के रूप में प्रकट होकर सृष्टिकर्ता ब्रह्मा के कार्य में सहायक होते आये हैं क्योंकि आसुरी शक्तियों द्वारा सृष्टि उत्पादन में विघ्न बाधा की जाती रही है। इसलिये हम हर कार्य के प्रारम्भ में उसकी निर्विघ्न सफलता के लिये गणेश जी से निवेदन कर हम उनकी कृपा पा लेते हैं और कार्य निर्विघ्न सम्पन्न हो जाता है।

'वक्रतुण्ड महाकाय सूर्य कोटि सम प्रभा,
निर्विघ्नं कुरू मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा।।'

वेदों, पुराणों, स्मृतियों एवं संहिताओं में गणपति उपासना की बात मिलती है। यंत्र, मंत्र, तंत्र शास्त्र में भी गणेश जी संबंधित कई काम्य कर्म साधनाएं मिलती हैं। तैंतीस कोटि देवताओं में गणेश जी का सर्वप्रथम महत्व है ओर वे प्रथम पूज्य हैं। किसी भी देव की आराधना में, प्रारंभ में, किसी भी सत्कर्मानुष्ठान में, किसी भी उत्कृष्ट से उत्कृष्ट एवं साधारण से साधारण लौकिक कार्य में भगवान गणपति का स्मरण, उनका विधिवत अर्चन, पूजन एंव वंदन किया जाता है। गणपति विघ्न विनाशक हैं, इनके सामने विघ्न ठहर ही नहीं सकते हैं। जब विघ्नों ने ब्रह्मा जी से शिकायत की कि हम कहाँ जायें तो ब्रह्मा पार्वती जी से शिकायत करत हैं।

श्री गणेश जी के द्वादश नामों का लोक में सर्वाधिक महत्व एंव प्रचलन है। जो व्यक्ति विद्यारम्भ के समय, विवाह के समय, नगर में नवनिर्मित भवन में प्रवेश करते समय, यात्रा में कहीं भी बाहर जाते समय, संग्राम के अवसर पर अथवा किसी भी प्रकार की विपत्ति के समय यदि श्री गणेश के बारह नामों का स्मरण करता है तो उसके उद्देश्य अथवा मार्ग में किसी भी प्रकार का विघ्न नहीं आता है। श्री गणेश जी के बारह नाम निम्न प्रकार से हैं:–

सुमुख, एकदंत, कपिल, गजकर्ण, लंबोदर, विकट, विघ्ननाशक, विनायक, धूम्रकेतु, गणाध्यक्ष, भालचन्द्र, गजानन।

गणेश जी के कई अवतार हैं, उनमें से आठ अवतार प्रसिद्ध है– वक्रतुण्ड, एकदंत, महोदर, गजानन, लम्बोदर , विकट, विघ्नराज, धूम्रवर्ण।

गणेश जी को अपनी पूजा में दूर्वा सर्वाधिक प्रिय है। दूर्वा के 21 पत्रों से पूजन करना गणेश जी को शीघ्र प्रसन्न करता है। गणेश जी की पूजा सामान्यतः हरिद्रा की गोली मूर्ति पर भी की जाती है। हरिद्रा में मंगलाकर्षिणी शक्ति है तथा वह लक्ष्मी का प्रतीक भी है। नारदपुराण में तो गणेश जी की सुवर्णमयी प्रतिमा बनाने का आदेश देकर उसके अभाव में हरिद्रा से उसे बना लेने की छूट दी गयी है। गोमय में लक्ष्मी का स्थान होने के कारण लक्ष्मी प्राप्ति के लिये गणेश जी की उपासना गोमय गोबर मूर्ति पर की जाती है। गणेश जी की विशेष कृपा शीघ्र पाने के लिये श्वेत आर्क (सफेद आक) की जड़ को पुष्य नक्षत्र युक्त रविवार के दिन मंत्रोच्चारण पूर्वक उखाडकर उस जड़ से अंगूठे के बराबर की गणेश जी की मूर्ति बनाकर पचांमृत से उसका अभिषेक करके पूजा में रख लें, जो बहुतों द्वारा अनुभूत है तथा इसका संकेत अग्निपुराण के 301 वें अध्याय में भी मिलता है। अगर पुष्ययुक्त रविवार अलभ्य हो तो केवल पुष्य नक्षत्र के दिन भी उक्त श्वेत आक की जड़ को उखाड़कर पूजा के लिये उसका उपयोग कर सकते हैं। श्री गणेश जी की लकड़ी की मूर्ति बनाकर घर के बहिद्वार के ऊर्ध्वभाग में उसकी स्थापना करने पर गृह मंगलायुक्त हो जाता है।

गणेश जी की पूजा उपासना में प्रयोग किये जाने वाले विभिन्न मंत्र उपलब्ध हैं लेकिन मुख्यतः कुछ मंत्र निम्न प्रकार से है:–

शेष पेज 19 पर.....

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री,
असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक
मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

सब तें सेवक धरमु कठोरा

सुरेश अग्रवाल
आगरा

गोस्वामी तुलसीदास जी की अपने आराध्य भगवान श्री राम के प्रति **श्रद्धा और विश्वास** व्यक्त करते हुए यह अनुभव गम्य घोषणा है।

पायो परम विश्रामु राम समान प्रभु नाही कँहू। गोस्वामी जी की भक्ति साधना में अनेकों भाव हैं, लेकिन उन्होने अपने प्रभु की सर्वाधिक सेवा दास्यभाव से की है। सेवा में समर्पण भाव के बिना, मनुष्य सच्चा सेवक बन ही नहीं सकता। प्राणपण से निष्काम सेवा करना ही अनन्यभक्ति है। स्वर्ग, नरक तथा बैकुण्ठ की चिन्ता छोड़कर उनको श्री राम का सेवक बनकर रहना ही सबसे अच्छा लगता हैं क्योकि कोई नहीं जानता कि कौन नरक जायेगा, कौन स्वर्ग और कौन परमधाम जायेगा?

वे ''सिय राम मय सब जग जानी'' को ही बैकुण्ठ धाम मानते थे। उनके लिए राम का सेवक बनकर रहना ही श्रेष्ठ लगता है।

सेवाधर्म की महत्ता तथा पावनता को सर्वोपरि महत्व देते हुए, बाबा तुलसी ने शंकर जी को भी एक महान सेवक के रूप में प्रस्तुत किया है। एक सच्चे एंव आदर्श सेवक के चरित्र का निर्वाह करने के लिए शंकर जी वानर बनकर श्री हनुमान जी के रूप में अवतरित हुए थे और ब्रह्मा जी जाम्बवान बन गये।

अपने आराध्य भगवान श्री राम की अलौकिक उदारता और अहेतु की कृपा के कारण उन्होने श्री राम को अपना स्वामी और स्वंय को उनका सेवक मानने का सकंल्प जीवन पर्यन्त बनाये रखने की प्रार्थना की, क्योंकि उनकी मान्यता थी अपने स्वामी की सेवा करने का अवसर समस्त प्राणियों को सदैव और सर्वत्र उपलब्ध है केवल आवश्यकता है, **सच्ची श्रद्धा और भक्ति** की। प्रभु श्री राम के काम आ जाना भक्त के जीवन की सार्थकता है। गोस्वामी जी ने श्री राम चरित मानस में ऐसे पात्र निरूपित किए हैं, जिन्होने राम के नाम के साथ साथ राम के काम पर भी अत्यधिक बल दिया है जैसे भरत जी, लक्ष्मण जी, निषादराज, सुग्रीव, जटायु, हनुमान जी, अंगद, विभीषण। बदले में उनको प्रभु की ममता और वात्सल्य के दर्शन हुए थे।

'' परहित सरिस धर्म नहीं भाई '' को सामाजिक आदर्श सिद्ध करने वाले तुलसी जी के सेवा भाव तथा परहित की धारणा के अनुरूप, यदि हम प्राणीमात्र की अतिशय एंव निष्काम सेवा में जुट जाएं, तो वर्तमान में पोषित संकीर्ण एंव भौतिकवादी स्वार्थी समाज की अनेकानेक समस्याओं का अन्त सुनिश्चित है। अतएव हमें क्षुद्र विचारधारा से बाहर निकलकर, समाज व देश के हितार्थ कर्त्तव्य परायणता, मर्यादित व्यवहार, तथा दास्यभाव का उज्जवल उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए– तभी राम राज्य का उदात्त स्वप्न साकार हो सकता है। जन सेवक का सेव्य भाव ही राष्ट्र के मंगल की आधार शिला है। ❋❋❋

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका के सदस्य अपना भवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नहीं देते जिसके कारण भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नहीं मिलती। अत: पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

मंत्र एंव यंत्र की महत्वता

श्री भगवान पाराशर
कर्मकाण्ड महामहोपाध्याय

हमारे भारत वर्ष में विभिन्न प्रकार की विधा (पद्धति) द्वारा मानसिक, शारीरिक व अन्य संकटों कष्टों का निवारण होता आया है। इन्ही पद्वति में एक मन्त्र व यन्त्र भी है। इन्हें सरल शब्दों में कहे तो मन्त्र एक **ध्वनि विज्ञान** है तथा यन्त्र **आकृति विज्ञान** है।

विभिन्न स्वरों, व्यंजनों, शब्दों के उच्चारण से जो स्वर गूँजते हैं, उससे एक नाद शक्ति बनती है। विभिन्न नाद शक्तियों का पृथक पृथक प्रभाव होता है। जिससे एक वातावरण बनता है जो कि हमारे, मन, मस्तिष्क व वाणी को प्रभावित करता है। अतः विभिन्न कामनाओं एंव कार्यो के निमित्त विभिन्न प्रकार के मन्त्रों का निर्माण होता है। जिस प्रकार से रेडियो टी.वी. आदि पर प्रसारित हास्यजनक कार्यक्रम देखकर, सुनकर हम प्रसन्न हो जाते हैं तथा भयावह कार्यक्रम देख सुनकर डर जाते है। ठीक उसी प्रकार से मन्त्र पाठ जाप करने से उस मन्त्र की शक्ति का निर्माण होता है। मन्त्र जाप में मुख्य रूप से विश्वास, श्रद्धा, लय, मन्त्र की ताल बद्धता का होने से विशेष लाभ होता है। तथा मन्त्र जाप मे दिशा, समय आसन, माला आदि का भी ज्ञान आवश्यक है। मन्त्रों का जाप सही विधि पूर्वक किया जाये तो मनोकामना अवश्य ही पूर्ण होती है। इस विराट विश्व में ऐसी कोई चीज नहीं है, जो मन्त्र शक्ति के प्रभाव से प्राप्त न की जा सके। अपितु मन्त्र साधना से आत्मा को परमात्मा में विलीन किया जा सकता है। मन्त्रों से की गयी भक्ति की शक्ति अपार है इसका महत्व शब्दों द्वारा नही समझाया जा सकता है।

यन्त्रों में भी विशेष दैवीय शक्ति छिपी होती है। वर्तमान युग में हम यन्त्र का अर्थ मशीन से लेते हैं। मशीन का कार्य, उद्देश्य एंव पद्धति, भौतिक से भौतिक तक है इसलिए उसकी रचना एंव साधना का प्रकार भी भौतिक रहा करता है, हमारे यन्त्र अभौतिक स्तर की साधना हुआ करते है। अपने अभीष्ट के अनुसार हम यन्त्रों को बनाते है इनको बनाने में पत्र, स्याही, लेखनी, आसन के साथ साथ उनमें प्राण प्रतिष्ठा करने की विधि का ज्ञान होना आवश्यक है। मूलतः यंत्र एक मूर्त स्वरूप होता है, जिसे हम सिद्ध करके शक्ति से पूरित कर कार्य सक्षम बनाते है। जिस प्रकार किसी भी मशीन को बनाने से पहले या घर बनाने से पहले उसे रेखांकित किया जाता है। डिजाइन या ग्राफ तैयार किया जाता है। ठीक उसी प्रकार यन्त्र को भी रेखांकित (रेखा अंक शब्द व बिन्दुओं द्वारा) किया जाता है, तथा जो आकृति बनती है उसी आधार पर उसे नाम दिया जाता है। अलग अलग कार्यो के लिए अलग अलग यंत्रो की आकृति होती है, तथा अलग अलग मन्त्रों द्वारा पूजित अथवा सिद्ध किया जाता है, जिससे यन्त्र में शक्ति का संचार होता है तथा सिद्ध यंत्र का सम्मान न किया जाये तो वे फल भी पूर्ण नही देते है। अतः पूजित यंत्रो का पूर्ण सम्मान करना चाहिए। जिस प्रकार बिजली को पकड़ कर स्टोर नहीं किया जा सकता है परन्तु बैटरी, द्वारा उसकी शक्ति को रक्षित करके कभी भी प्रयोग किया जा सकता है, ठीक उसी प्रकार यन्त्र में भी और कहीं भी मन्त्र शक्तियों को स्टोर कर किसी स्थान या व्यक्ति विशेष को लाभ पहुँचाया जा सकता है।

मन्त्रों को जिस कार्य के निमित्त किया जाता है, उसी तक सीमित रहता है । जबकी यंत्र अपने आपमें स्वतन्त्र अस्तित्व बन जाता है। मंत्र साधक की शक्ति का विकास है और यन्त्र साधक की शक्ति का साधित प्रतीक है अर्थात मंत्र पूर्ति का साधक है यन्त्र। यन्त्र मन्त्र एक दूसरे के पूरक है। एक के अभाव में दूसरे का प्रभाव क्षीण हो जाता है। यन्त्रों में सिद्वि है। सिद्धि मंत्रों में है परन्तु आवश्यकता है सही मार्गदर्शक सही सद्गुरू की। ❋❋❋

कैसें बनायें बच्चों का अध्ध्यन कक्ष उर्जावान

1. बच्चे का मुँह पढ़ते समय पूर्व दिशा की ओर रहे।
2. पढ़ते समय बच्चे के सामने कोई बड़ी अलमारी नहीं होनी चाहिए।
3. प्रत्येक माता पिता चाहते हैं कि उनका बच्चा पढे, लिखे, स्वस्थ एवं बुद्धिमान बनें। फेंगशुई में इसके उपाय हैं। बच्चों के स्टडी रूम को यदि वास्तु के अनूकुल कर दिया जाये तो बच्चों का मन पढ़ाई में लगने लगता है।
4. सर्वप्रथम तो बच्चों का स्टडी रूम ईशान या पूर्व के क्षेत्र में बनाएं।
5. स्टडी रूम में स्टडी टेबिल को उस कमरे के ईशान कोण में रखें।
6. ईशान कोण को ऊर्जावान बनाने के लिए उस कोण में गमले में एक डनडोर प्लांट लगा दें।
7. स्टडी टेबिल खिड़की के साथ लगाएं।
8. बच्चे की टेबिल पर क्रिस्टल का ग्लोब अवश्य रखें।
9. बच्चे के स्टडी रूम में टीवी, कम्प्यूटर आदि न रखें।
10. स्टडी रूम में फिल्म, स्पोर्टस, पॉप सिंगर आदि के पोस्टर न लगाएं।
11. स्टडी टेबिल में एक लैम्प अवश्य रखें। उसकी रोशनी में बच्चे को पढना चाहिए।
12. बच्चे के कमरे में लाल रंग का पर्दा या कुर्सी के कुशन लाल रंग का रखें।
13. बच्चे के कमरे में ज्योमिति डिजाइन के फोटोग्राफ न लगाएं।
14. ईशान कोण में किसी पहाड़ की फोटो लगाएं।
15. स्टडी टेबिल पर किताबें बेतरतीबी से नहीं रहनी चाहिए।
16. स्टडी रूम में सोने का स्थान न रखें, वहां पर पंलग नहीं रहना चाहिए। ❋❋❋

16 जून - 15 जुलाई

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ- प्रियजनों में से किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। धन हानि होने की संभावना रहेगी। कारोबार या व्यवसाय में रूकावटें आयेंगी। शत्रु पक्ष आप पर हावी रहेंगें।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। घरेलु अच्छे एवं गुण वाले लोगों से मेल सूत्र बढ़ेगा। आपकी आय का स्रोत्र अच्छा रहेगा परन्तु व्यय आय के अनुपात में ज्यादा होगा।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– आपको यात्रा में शारीरिक एवं आर्थिक कष्ट होना भी सभंव हैं। आर्थिक लाभ होगा परन्तु फिर भी हानि का भय निरन्तर रहेगा। अपने भाइओं से मनमुटाव की स्थिति होने की संभावना रहेगी।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस मास में सन्तान को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। आपको अपनी पत्नि से लाभ प्राप्त होगा। स्थान परिवर्तन होने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव अधिक रहेगा। कारोबार, व्यवसाय ठीक चलेगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस माह में आपको राज्यभय रहेगा। आर्थिक लाभ होगा परन्तु फिर भी हानि का भय निरन्तर रहेगा। अपने कार्य से आपको लाभ की प्राप्ति होगी। नेत्र कष्ट जैसे रोग से ग्रस्त रहेंगे।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– मानसिक तनाव अधिक रहेगा। आपको सन्तान की तरफ से चिन्ता रहेगी। आपको पत्नि का सहयोग एवं पूर्ण सुख मिलेगा। आपकोप्रियजनों का सुख एवं साथ मिलेगा। सम्पत्ति से लाभ प्राप्त होगा।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते–घरेलू परेशानियों की वृद्धि होगी। कारोबार या व्यवसाय व नौकरी में भी कुछ रूकावटें उत्पन्न होंगी। आपको सन्तान की तरफ से चिन्ता रहेगी। आपके समय के अनुसार काम होते रहेंगे।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस मास मे स्वास्थ्य ठीक-ठीक रहेगा। आपको अपने कार्य से लाभ की प्राप्ति होगी। सन्तान पक्ष से चिन्ताऐं बनी रहेगी। आपको अपनों का सहयोग मिलेगा।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- इस माह मे धनहानि होने की संभावना रहेगी। क्रोध में निरन्तर वृद्धि होगी। मानसिक तनाव अधिक रहेगा। आपके प्रियजनों या रिश्तेदारों में किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। वृथाविवाद से दूर रहें।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। यात्रा का सुख प्राप्त होगा। आपको सन्तान पक्ष से चिन्ता बनी रहेगी। रक्त-पित्त जैसे रोगों से आप ग्रस्त रहेंगे।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। आपको राज भय रहेगा। अपने प्रियजनों से मनमुटाव की स्थिति होने की संभावना रहेगी। नई-नई योजानओं से लाभ की प्राप्ति होगी।

मीन(PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- आपकी पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। इस मास में आर्थिक हानि होने की संभावना रहेगी। शत्रुओं की संख्या में वृद्धि आयेगी। घरेलु अच्छे एवं गुण वाले लोगों से मेल सूत्र बढ़ेगा।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

जून	जुलाई
16.श्री गणेश चतुर्थी व्रत **20**.शीतलाष्टमी(सीताष्टमी)व्रत **23**.योगिनी एकादशी व्रत **24**.प्रदोष व्रत **27**.अमावस्या (स्नान/दान) **29**.रथयात्रा जगन्नाथपुरी	**1**.श्री विना. चतुर्थी व्रत **2**.स्कन्ध पंचमी, **3**.कुमार षष्ठी **4**.सूर्य सप्तमी **5**.दुर्गाष्टमी **6**.भण्डली नवमी **10**.प्रदोष व्रत **11**.विश्व जनसंख्या दिवस **12**.पूर्णिमा व्रत, गुरु पूर्णिमा (मुड़िया पुनो), पार्थिव पूजन प्रारम्भ, विश्व जनसंख्या दिवस **14**.श्रावण सोमवार व्रत **15**.मंगला गौरी व्रत, श्री विनायक चतुर्थी व्रत

ग्रहारम्भ मुहूर्त

जून – नही है। **जुलाई**– नही है।

गृह प्रवेश मुहूर्त

जून– नही हैं। **जुलाई**– नही है।

दुकान शुरू करने का मुहूर्त

जून– 29, 30

जुलाई– 4, 5, 6, 9, 13

नामकरण संस्कार मुहूर्त

जून– 22, 25, 29, 30

जुलाई– 4, 14

सर्वार्थ सिद्ध योग

जून	जुलाई
15 ता. प्रातः 7:59 से 16 ता. प्रातः 05:28 तक 20 ता. रात्रि 09:48 से 21 ता. प्रातः 05:23 तक 22 ता. प्रातः 05:24 से रात्रि 10:09 तक 24 ता. प्रातः 05:24 से रात्रि 12:20 तक 25 ता. प्रातः 05:25 से रात्रि 01:59 तक 29 ता. प्रातः 8:58 से 30 ता. प्रातः 11:51 तक	01 ता. प्रातः 05:26 से दोपहर 14:51 तक 09 ता. प्रातः 05:30 से रात्रि 01:09 तक 13 ता. प्रातः 05:32 से दोपहर 02:58 तक 14 ता. प्रातः 05:32 से दोपहर 12:02 तक

16 जुलाई - 15 अगस्त

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ–इस मास में लाभ होकर हानि का भय रहेगा। अच्छे लोगों से मेल–जोल बढ़ेंगे स्वास्थ्य खराब रहेगा। अपमान होने का भय रहेगा। मास के अन्त में खर्चे अधिक होंगे।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस मास में गुप्त शत्रु से बचें। व्यवसाय में बदलाव होने की संभावना रहेगी। सन्तानपक्ष से चिन्ता लगी रहेगी। व्यवसाय में रुकावटें आयेंगी। कार्य में निरन्तर लाभ होने की संभावना रहेगी।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। प्रियजनों से मन–मुटाव होने की स्थिति बनेगी। कार्य में निरन्तर लाभ होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में कारोबार ठीक हो जायेगा।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस मास में हानि होने का भय रहेगा। निजी लोगों से परेशानी होने की संभावना रहेगी। इस मास में शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। मास के अन्त में स्वास्थ्य खराब रहेगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– पत्नि का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। शत्रु प्रबल रहेंगे। प्रियजन का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय ठीक रहेगा। कार्य में निरन्तर लाभ होने की संभावना रहेगी।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो–सन्तानपक्ष से सुख की प्राप्ति होगी। इस माह में वायु रोग होने की संभावना रहेगी। बहिनों का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। नौकरी में बदलाव होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में खर्चे अधिक होंगे।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस मास में लाभ होने की संभावना रहेगी। सम्पत्ति का लाभ होने की संभावना रहेगी। यात्रा में कष्ट होने की संभावना रहेगी। नई योजनायें बनाने में सक्षम रहेंगे।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू–इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। प्रियजनों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। योजनाओं से लाभ होगा। व्यवसाय मास के अन्त में ठीक हो जायेगा। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- प्रियजनों को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। कार्य में निरन्तर हानि होने की संभावना रहेगी। घरेलू परेशानी लगी रहेगी। गुप्त शत्रु से बचें। मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस मास में धन लाभ होने की संभावना रहेगी। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। निजी लोगों से परेशानी होने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव से बचें। पिता का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- प्रियजनों का पूर्ण सूख प्राप्त होगा। व्यवसाय में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। धन हानि होने की संभावना रहेगी। माता को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। शत्रु प्रबल होंगे। मानसिक तनाव से बचें।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। योजनाओं से लाभ होगा। व्यवसाय मास के अन्त में ठीक हो जायेगा।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

जुलाई	अगस्त
16.नाग पंचमी(बंगाल) **17**.षष्ठी **18**.शीतला सप्तमी **19**. कालाष्टमी **21**.श्रावण सोमवार व्रत **22**.कामदा एकादशी व्रत, मंगला गौरी व्रत, **23**.बाल गंगाधर तिलक जयंती **24**. प्रदोष व्रत **26**.हरियाली अमावस्या **28**.श्रावण सोमवार व्रत **29**.मंगला गौरी व्रत **30**. श्री गणेश चतुर्थी व्रत, हरियाली तीज	**1**.श्री नाग पंचमी **2**.वरुण षष्ठी **3**.गोस्वामी तुलसी दास जं., **4**.दुर्गाष्टमी, श्रावण सोमवार व्रत **5**.मंगला गौरी व्रत **7**.पुत्रदा एकादशी व्रत, श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर पु. दि. **8**.प्रदोष व्रत **9**. क्रांति दिवस **10**.पूर्णिमा, रक्षाबन्धन **13**.श्री गणेश चतुर्थी व्रत,कंजली तृतीया **15**.भारतीय स्वतंत्रता दिवस

ग्रहारम्भ मुहूर्त

जुलाई– नही है।
अगस्त– 1, 2, 6, 9,

गृह प्रवेश मुहूर्त

जुलाई– नही है। **अगस्त** – 2, 9,

दुकान शुरू करने का मुहूर्त

जुलाई– 13,30
अगस्त– 1, 3, 4, 6, 8, 9, 11,

नामकरण संस्कार मुहूर्त

जुलाई– 18, 24
अगस्त – 3, 6, 10,

सर्वार्थ सिद्ध योग

जुलाई	अगस्त
18 ता. प्रातः 05:34 से रात्रि 03:31 तक 22 ता. प्रातः 05:36 से 5:52 तक 23 ता. प्रातः 05:37 से 24 ता. प्रातः 05:34 तक 25 ता. दोपहर 12:26 से 26 ता. प्रातः 05:36 तक 27 ता. प्रातः 05:39 से सायं 06:04 तक	06 ता. प्रातः 05:43 से प्रातः 10:35 तक 14 ता. दोपहर 12:19 से 15 ता. प्रातः 05:36 तक

घर की शांति और संपन्नता में वास्तु की भूमिका

श्रीमती पूनम दत्त
आगरा

जिस तरह इस पृथ्वी पर नौ ग्रहों का राज है, ठीक उसी तरह इन्हीं नौ ग्रहों का राज सभी घरों में अपनी– अपनी दिशाओं में हैं। सूर्य पूर्व दिशा में राज करता है तो शुक्र का परचम दक्षिण पूर्व में फहरता है, मंगल का प्रभाव दक्षिण में है तो राहु दक्षिण पश्चिम दिशा का राजा है, शनि पश्चिम में, चन्द्रमा का प्रभाव क्षेत्र उत्तर–पश्चिम, तो बुध का राज उत्तर में और बृहस्पति तथा केतु का प्रभाव उत्तर पूर्व में होता है।

इन नौ ग्रहो में से सबकी अपनी–अपनी विशेषताएं हैं। जैसा कि आप जानते हैं कि सूर्य के प्रभाव से घर में शिक्षा, स्वास्थ्य, जीवन में उचित अवसर, रचना शीलता और उन्नति के अवसर बढते हैं, वहीं आंख एंव दूसरी आनुंवशिक बीमारियां मसलन हृदय तथा धमनी रोग आदि उत्पन्न होते है।

अपने आस पड़ोस के घरों में नजर दौड़ाकर आप देख सकते हैं कि जिस घर का दरवाजा या खिडकी पूर्व दिशा की ओर नहीं खुलती, उस घर में धन–धान्य, व्यवसाय, बौद्धिक विकास, गृहलक्ष्मी सम्पन्नता आदि बनी रहती है। यदि घर के उत्तरी भाग में दक्षिण की तुलना में जमीन की ऊँचाई या घर का निर्माण ऊँचा हो तो इससे घर में विपदा की स्थिति उत्पन्न होती है और गृहक्लेश का वातावरण बना रहता है।

यदि घर के उत्तर–पश्चिम दिशा की ओर ज्यादा खुलापन हो और उत्तर दिशा में संकीर्णता हो तो इससे क्लेश की स्थिति उत्पन्न होती है। इस प्रकार के वास्तु वाले घरों में रहने वालों को हमेशा ही आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता है और व्यवसाय में लगातार घाटे की स्थिति बनी रहती है। महिलाओं में रूग्णता बनी रहती है और दिन ब दिन जीवन का क्षय होता जाता है।

इसलिए यदि आप नौ ग्रहों के अनिष्ट प्रभाव से दूर रहना चाहते हैं तो अपना घर बनाते समय चारों दिशाओं के अलावा चारों कोणों की रूपरेखा भी तैयार कर लें क्योकि इसमें से एक भी कोण भूलना या जानबूझ कर छोड़ना खतरनाक हो सकता है। यह नियम केवल निजी प्लाटों पर ही लागू नहीं होता बल्कि ऊंची–ऊंची इमारतों में भी प्रभावी होता है।

पूर्व एंव उत्तर पूर्व दिशा में होने वाली व्याधि से घर में भंयकर संकट की स्थिति पैदा हो सकती है क्योकि पूर्व में सूर्य का कोप और उत्तर पूर्व में बृहस्पति की कुदृष्टि से घर के मुखिया या उसके बड़े पुत्र को गंभीर हानि की आशंका बनी रहती है। इसके अलावा घर के किसी भी पुरूष सदस्य के अंग भंग की आशंका रहती है, इसलिए किसी भी प्लाट पर वास्तु नियमों के अनुसार निर्माण उचित है, इसकी परख कैसे की जा सकती है। किसी भी प्लाट के चतुष्कोण होने ही चाहिए यानी उसका आकार चोकोर होना चाहिए। इसके अलावा कोई भी ज्यामितीय आकार उचित नहीं होता क्योकि इससे हमेशा कुछ न कुछ घटित होने की संभावना बनी रहती है।

एक वास्तुकार का कहना था कि आज से 35 वर्ष पहले वह जिस मकान में रहता था, उसका दरवाजा उत्तर की ओर तो था, लेकिन और सब निर्माण कार्य वास्तु के नियमों के उलटे थे। उसने जब वास्तु के तहत मकान का आँकलन किया तो उसे समझ में आया कि उसका कई बार एक्सीडैंट क्यों हुआ और वह भी तब जबकि वह बिल्कुल धीमे गाड़ी चला रहा था। दरअसल इसका कारण वास्तु नियमों का उल्लंघन था। घर के उत्तरी पूर्वी कोण का अता पता ही नहीं था। वास्तुविदों के मुताबिक इस प्रकार के मकानों में रहने वाले किसी न किसी समस्या से ग्रसित रहते हैं। ऐसे घरों में किसी सदस्य की अकाल मौत की आंशका रहती है।

हमारे वैदिक शास्त्रों के अनुसार बृहस्पति को घर में विवेक का जनक माना गया है। बृहस्पति की कृपा से किसी भी घर में क्लेश और दुर्घटना की संभावना क्षीण हो जाती है। घर में यदि बृहस्पति

शेष पेज 18 पर.....

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरूम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर,
कोल्ड स्टोरज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना
तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा

डॉ. महेश पारासर
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

सज्जनों की बुद्धि

(मामा की कलम से)

विजय शर्मा
आगरा

किसी वन में मदोत्कट नाम का एक शेर रहता था। उसके तीन सेवक थे– कौआ, बाघ और सियार।

ये तीनों वन में इधर–उधर घूमते रहते थे और लौटकर अपने स्वामी शेर को वन के सभी समाचार सुनाया करते थे। वन में कोई नया प्राणी आता तो सबसे पहले इन्हें ही पता चलता और उस प्राणी को सर्वप्रथम उनसे ही मिलना पड़ता था।

एक दिन तीनों वन में घूम रहे थे कि उन्हें अपने साथियों से बिछड़ा हुआ एक ऊंट मिला।

कौए ने जोर से झपटते हुए कहा, ऐ ऊंट! तू किसकी आज्ञा से इस वन में घूम रहा है?

तब ऊंट ने अपना सारा वृतान्त उन्हें कह सुनाया। ऊंट की दुःख भरी कहानी सुनकर तीनों को उस पर दया आई और फिर वे उसे शेर के पास ले गए। तीनों की प्रार्थना पर शेर ने ऊंट को अभय वचन दे दिया। उस दिन से ऊंट भी शेर के सेवकों में से एक हो गया।

एक बार शेर का स्वास्थ्य बिगड़ गया। ऊपर से बरसात होने लगी। वर्षा अधिक होने के कारण तीनों सेवकों को कुछ खाने को नहीं मिला। तीनों भूख के मारे छटपटाने लगे। शेर का स्वास्थ्य ठीक होता तो वह शिकार मारकर ले आता।

कौए, बाघ और सियार ने अकेले में विचार कर यह निश्चय किया कि कोई ऐसा उपाय करना चाहिए, जो शेर अपने आप ऊंट को मारे। बाघ बोला, स्वामी ने इसे अभय वचन दे रखा है, इसलिए वह ऐसा नहीं करेगें।

''इस समय भूख से व्याकुल शेर पाप जरूर करेगा। यह जान लो भूखी स्त्री अपने पुत्र को छोड़ देती है, पर भूखी नागिन अपने अण्डों को खा लेती है।'' मेरा कहना है कि भूखा भूख मिटाने के लिए पाप करने को तत्पर रहता है। वैसे भी क्षीण मनुष्य करूणाहीन होते हैं। भूख और बुढ़ापे से क्षीण यह शेर दया का पात्र है।

''मतवाला, असमर्थ, उन्मत्त, थका हुआ, क्रोधित, भूखा, लोभी, डरपोक, बिना विचारे करने वाला और कामुक कभी भी धर्म पर चलने वाले नहीं होते।'' कौआ बोला।

सभी शेर के पास गये। शेर ने उन्हें देखकर कहा– आहार के लिए कुछ मिला?

''यत्न करने पर भी कुछ नही मिला।'' उन्होने एक स्वर में कहा।

शेर ने कहा, अब जीने का क्या उपाय है।

कौआ बोला, महाराज! अपने अधीन आहार को त्यागने से यह वक्त आ पहुंचा है।

यह सुनकर शेर बोला, हमारे अधीन कौन सा आहार है?

कौए ने शेर के पास जाकर कान में कहा, चित्रकर्ण ऊंट।

शेर ने भूमि को छूकर कान छुए और बोला, इसे अभय वचन दे रखा है,इसलिए ये कैसे हो सकता है। जगत में सब दानों में श्रेष्ठ दान अभयदान है। इस दान के सामने तो भूमि, स्वर्ण, गौदान और अन्नदान भी कुछ नहीं है। सभी मनोरथ पूरे करने में जो फल यज्ञ का है वही शरणागत की भली–भांति रक्षा करने से मिलता है।

''आप इसे न मारें। हम ही कुछ ऐसा उपाय करेंगे जिससे वह देहदान करना स्वीकार करे।'' कौआ बोला।

कौए की बात सुनकर शेर चुप हो गया।

वह नहीं चाहता था कि उसकी शरण में आया हुआ कोई पशु मारा जाए और वह भी पशु जिसको उसने अभयदान दे रखा है।

कौआ वहां से अपने साथियों के पास गया और ऊंट को छोड़कर सबके कान में कुछ कहा।

बाद में शेर से बोला महाराज! बहुत यत्न करने पर भी भोजन का प्रबन्ध नहीं हो सका। कई दिनों से खाने को न मिलने से स्वामी दुःखी हो रहे हैं। अतः मेरा आपसे निवेदन यह है। कि मेरे मांस का भोजन करें। स्वामी ही सब प्रजा का मूलाधार होता है। वृक्ष के

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

फलने–फूलने से फल मिलता है आप जीयेंगे तो हम सबका जीवन सफल हो जाएगा। शेर ने कहा, ''मरना अच्छा है, पर ऐसे काम में मन चलाना अच्छा नहीं।'' सियार बोला, महाराज! यदि आपकी भूख इस कौए के मांस से नहीं मिट सकती, तो मेरा शरीर आपके लिए तैयार है। आप चाहें तो मुझे किसी भी तरह से अपनी भूख का भोग बना सकते हैं। मेरा सौभाग्य होगा यदि आपने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर लीं।

सियार भी कौए की तरह ऊपरी मन से अपने स्वामी को आनन्दित करना चाह रहा था। बाघ ने भी आगे बढ़कर स्वामी को अपना शरीर पेश किया– स्वामी! आप यदि जिन्दा रहेंगे, तो वन में बहार रहेगी। आप तो सब पशुओं की रक्षा कर सकते हैं, यदि हम में से कोई भी न बचा तो वन में किसी चीज की कमी न होगी। परन्तु यदि भगवान न करे आपका दम निकल गया तो हमारी जाति के अन्य पशु ऐसे हो जाएंगे, जैसे बिना राजा के प्रजा! इसलिए हम सब चाहते है कि आपका जिन्दा रहना हमारे लिए सौभाग्य की बात होगी। आप हम सबको अपने पेट का ईधन बनाएं और अपने प्राण–रक्षण करके हम पर कृपा करें।

वे तीनों चाह रहे थे कि यदि शेर ने ऊंट का भक्षण कर लिया तो उनके पेट की आग भी बुझ जाएगी और तीनों अपने स्वामी के साथ फिर पहले की तरह जीवन जीने लगेंगे।

उनकी बातें सुनकर शेर ने कहा, ऐसा कभी नहीं हो सकता है। मैं तुम में से किसी को भी नहीं खा सकता। ऐसा मेरी आत्मा मुझे आज्ञा नहीं देती है।चित्रकर्ण ऊंट ने मन में सोचा–सबने अपने आप को प्रस्तुत किया, पर शेर ने किसी को नहीं खाया। यह विश्वास करके ऊंट ने भी शेर को अपनी देह दान के लिए प्रस्तुत की। स्वामी! यदि आपकी इच्छा मेरा मांस खाने की हो तो मेरा शरीर आपके लिए हाजिर है। बाघ, कौआ और सियार तो इसी प्रतीक्षा में इतनी देर से झूठी बातें बना रहे थे। ऊंट की बात सुनकर शेर तो कुछ नहीं बोला और उसने अपना मुंह फेर लिया। शेर का मंह फिरा देखकर बाघ ने सोचा–अच्छा मौका है, इस समय ऊंट पर हमला किया जाना चाहिए। उसने सियार और कौए की तरफ देखा तो उन्होने बाघ को आंखों–आंखो में इशारा किया और बाघ ने ऊंट पर हमला कर दिया और उसे कुछ क्षणों में स्वर्ग का मेहमान बना दिया। इस तरह सबने मिलकर अपनी भूख मिटाई। कथा सुनाकर कौआ बोला, ''इसीलिए महाराज, मैं कहता हूं कि बुद्धिमानों की बुद्धि भी धूर्तों की संगत में चलाएमान हो जाती है।

राजा बोला हे मेघवर्ण! शत्रुओं के बीच में इतने दिन तक तू कैसे रहा? कैसे उनसे विनती करी?

''महाराज! स्वामी के काम के लिए सेवकों को क्या नहीं करना पडता? मनुष्य जलाने के लिए ईधन को क्या सिर पर नहीं उठाते? नदी का वेग वृक्ष की जड़ धोते हुए भी उसे उखाड़ देता है। चतुर मनुष्य को अपना काम निकालने के लिए शत्रुओं को कन्धे पर बैठा लेना चाहिए। बूढ़े सांप ने भी मेढकों को मार डाला था।'' मेघवर्ण बोला।

राजा बोला वो कैसे? मेघवर्ण बोला, इसकी भी एक कथा है। सुनिए मैं सुनाता हूँ। शेष अगले क्रमांक में..... ❋❋❋

शेष पेज 6 से आगे.....

दिन सूर्योदय से पहले ही उठना चाहिये और स्नान करके ब्राह्मण को यथा योग्य दान देना चाहिये। इसके पश्चात् क्षुधापीड़ित ब्राह्मण, अभ्यागत, अतिथि आदि को भोजन कराना चाहिये। तत्पश्चात् स्वंय भोजन करना चाहिये। इसका फल सम्पूर्ण एकादशियों के फल के बराबर है। हे भीमसेन स्वंय भगवान् ने मुझसे कहा था कि इस एकादशी का पुण्य समस्त तीर्थो और दानों के पुण्य के बराबर है। इस दिन निर्जल रहने से मनुष्य पापों से मुक्त हो जाता है। जो मनुष्य निर्जल एकादशी का व्रत करते हैं उसको मृत्यु के समय भयानक यमदूत नहीं दीखते हैं उस समय भगवान विष्णु के यमदूत स्वर्ग से आते हैं और उनको पुष्पक विमान पर बिठाकर स्वर्ग ले जाते है। अतः संसार में सबसे श्रेष्ठ निर्जला एकादशी का व्रत है। इसीलिए यत्नपूर्वक इस एकादशी का निर्जल व्रत करना चाहिये। उस दिन **ओउम् नमो भगवते वासुदेवाय** मन्त्र उच्चारण करना चाहिये। व्यास देव जी के ऐसे वचन सुनकर उसने निर्जल व्रत किया। इसी एकादशी को भीमसेनी या पाण्डव एकादशी भी कहते हैं। निर्जल व्रत करने से पहले भगवान् की पूजा करनी चाहिये और उनसे विनय करनी चाहिये कि दूसरे दिन भोजन करूँगा। अतः सम्पूर्ण सामर्थ्य मुझे प्रदान करें। मैं इस व्रत को श्रद्धापूर्वक कँरूगा। इससे मेरे सब पाप नष्ट हो जावें। इस दिन बड़े वस्त्र से वढ़कर स्वर्ण सहित जलपूरित घट दान करना चाहिये।

जो मनुष्य इस व्रत को दो प्रहर में स्नान तप आदि करके करते हैं उनको करोड़ पल स्वर्ण के दान का फल मिलता है। जो मनुष्य इस दिन यज्ञ होमादि करते हैं उसका फल वर्णन भी नहीं हो सकता । इस निर्जला एकादशी के व्रत से मनुष्य विष्णुलोक को जाता है। जो मनुष्य इस दिन अन्न खाते हैं उन्हें चाण्डाल समझना चाहिये। वे अन्त में नरक में आते है ब्रह्मा हत्यारे, मद्यपान करने वाले, चोरी करने वाले, गुरू से द्वेष करने वाले, असत्य बोलने वाले इस व्रत को करने से स्वर्ग को जाते हैं।

हे कुन्ती पुत्र, जो पुरूष या स्त्री इस व्रत को श्रद्धा पूर्वक करते हैं उनका निम्नलिखित कर्त्तव्य है। उन्हें सर्वप्रथम विष्णु भगवान् की पूजा करनी चाहिये। तत्पश्चात् गौ का दान करना चाहिये। इस दिन ब्राह्मणों को दक्षिणा, मिष्ठान आदि देना चाहिये। निर्जला के दिन अन्न, वस्त्र, छत्र, उपानह आदि का दान करना चाहिये। जो मनुष्य इस कथा को प्रेमपूर्वक सुनते व पढते हैं उनको स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

योगिनी एकादशी व्रत

वसुदेवनन्दन त्रयतापविनाशक गोपिकाबल्लभ भगवान श्री कृष्ण के चरणारविन्दों में विराजमान कुन्ती नन्दन धर्मराज युधिष्ठिर ने सादर पूछा वासुदेव! आषाढ मास के कृष्ण पक्ष

में जो एकादशी होती है, उसका क्या नाम है? कृपया उसका वर्णन कीजिए।

भगवान श्री कृष्ण ने कहा, नृपश्रेष्ठ आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम योगिनी है। इसके व्रत से दैहिक–दैविक–भौतिक तीनों प्रकार के ताप नष्ट हो जाते हैं। यह एकादशी इस लोक में सम्पूर्ण ऐश्वर्य भोग एवं परलोक में मुक्ति दायिनी है। संसारारण्य में भटकने वाले प्राणियों के उद्धार के लिये यह सर्वश्रेष्ठ साधन है। संसार सागर से पार जाने के लिए यह सनातन नौका है। यह एकादशी तीनों लोकों में प्रसिद्ध है। मैं पुराणों में वर्णित कथा आपको श्रवण कराता हूँ, ध्यान पूर्वक सुनोः–

कथा– राजन्! अलकापुरी में राजाधिराज कुबेर शासन करते हैं। वे सदा भूत भावन भोले भण्डारी भगवान शिव की भक्ति में तत्पर रहने वाले हैं। उनके दरबार में हेममाली नाम वाला एक यक्ष सेवक था, जो पूजा के लिये मान सरोवर से नित्य प्रति पुष्प लाया करता था। हेममाली के विशालाक्षी नाम वाली सुन्दर पत्नी थी। वह यक्ष कामपाश में आबद्ध होकर सदा अपनी पत्नी में आसक्त रहता था। एक दिन की बात है, हेममाली मानसरोवर से फूल लाकर अपने घर में ही ठहर गया और कामासक्त होकर विशालाक्षी के प्रेम का रसास्वादन करता हुआ उसके साथ काम–क्रीडा करने लगा, अतः महाराज कुबेर के भवन में न जा सका।

इधर कुबेर प्रतिदिन की भाँति मन्दिर में बैठकर महाकाल शिव का पूजन कर रहे थे। उन्होने मध्याह्न तक फूल आने की प्रतीक्षा की। जब पूजन का समय व्यतीत हो गया तो यक्षराज ने क्रोधित होकर सेवकों से पूछा यक्षो, दुरात्मा हेममाली अभी तक क्यों नही आया है? उसके बिलम्ब का क्या कारण है? इस बात की शीघ्रातिशीघ्र जानकारी करो।

यक्षों ने कहा, स्वामी वह तो पत्नी के प्रेम पाश में आसक्त हो अपनी इच्छानुसार घर में ही रमण कर रहा है।

उनकी बात सुनकर यक्षराज कुबेर आग–बबूला हो गए और तुरन्त ही हेममाली को बुलवाया। देर हुई जानकर हेममाली के नेत्र भय से व्याकुल हेा रहे थे। उसका शरीर थर–थर काँप रहा था। वह कुबेर के सामने खड़ा हो अपने अपराध के लिए क्षमा प्रार्थना कर रहा था, परन्तु कुबेर के नेत्र क्रोध से लाल हो गए। वे बोले, ओ पापी, महानीच, कामी दुराचारी, दुष्ट तूने ईश्वरों के भी ईश्वर भगवान शिव जी का अपमान किया है, अतः मैं तुझे श्राप देता हूँ कि तू स्त्री का वियोग भोगेगा एवं मृत्युलोक में जाकर कोढ़ से युक्त होगा।

कुबेर के श्राप से वह उसी क्षण अलकापुरी से पृथ्वी पर गिर पड़ा और कोढ़ी हो गया। उस समय वह पत्नी के वियोग व कोढ़ की पीडा के कारण महान् दुखी हो रहा था। परन्तु शिव सेवा के कारण उसकी स्मरण शक्ति लुप्त नही होती थी। पातक से दबा होने पर भी वह अपने पूर्व कर्म को याद रखता था। शिव भक्ति के कारण ही एक दिन वह इधर–उधर भ्रमण करता हुआ पर्वतों में श्रेष्ठ मेरू–गिरि के शिखर पर पहुँच गया। वहाँ उसे वयोवृद्ध, परमज्ञानी, परमहंस तपस्या के पुंज मुनिवर मार्कण्डेय जी का दर्शन हुआ। पापकर्म यक्ष ने दूर से ही मुनिवर जी के चरणों में साष्टांग प्रणाम किया। मुनिवर मार्कण्डेय ने उसे भय से युक्त देख परोपकार की इच्छा से निकट बुलाकर पूछा तुझे किस कर्म दोष के कारण कोढ़ जैसा भंयकर रोग लगाा है? तू क्यों इतना अधिक निन्दनीय जान पड़ता है।

यक्ष ने कहा– मुनिश्रेष्ठ! मैं कुबेर का अनुचर हूँ। मेरा नाम हेममाली है। मैं प्रतिदिन महाराज कुबेर को शिव पूजा के लिए मानसरोवर से पुष्प ले आकर दिया करता था। एक दिन काम विवश मैं पत्नी प्रेम में फँस जाने के कारण राजाधिराज कुबेर को शिव–पूजनार्थ पुष्प नहीं पहुँचा सका, अतः कुबेर ने क्रोधित होकर मुझे प्रियतमा के वियोग तथा कोढ़ी होने का श्राप दे दिया। महात्मन्! इस समय किसी शुभता के कारण मैं आपकी सानिध्यता को प्राप्त हुआ हूँ। संतों का स्वभाव निश्चय ही परोपकारी होता है, अतः मुझ अपराधी को कर्तव्य का उपदेश दीजिए। मार्कण्डेय जी ने कहा– तुमने यहाँ सत्य भाषण किया है। मुझसे किसी तथ्य को छिपाया नहीं है, इसलिए मैं तुम्हें कल्याण प्रद व्रत का उपदेश करता हूँ। तुम आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष में योगिनी एकादशी का व्रत करो। इस व्रत के प्रभाव से तुम्हारे सम्पूर्ण पाप ध्वस्त हो जायेंगे।

इस पर हेममाली अत्यन्त प्रसन्न हुआ और सर्वज्ञ, सर्वात्मा मार्कण्डेय मुनि के वचनानुसार योगिनी एकादशी का विधिपूर्वक व्रत एंव गोविन्द भगवान् का पूजन किया। इसके प्रभाव से वह फिर अपने पूर्व रूप को प्राप्त हो अपनी स्त्री के साथ विहार करने लगा। हे राजन्। इस योगिनी एकादशी का फल अट्ठासी सहस्त्र ब्राह्मणों को भोजन कराने के सदृश है। यह महान् पापों को शमन करने वाली एंव अनन्त पुण्यफल देने वाली है। इसके पढ़ने व सुनने से मनुष्य सब पातकों से मुक्त हो जाता है। ❋❋❋

हमारे यहा रत्नों को लेब से टेस्टिड (Lab Certified) कराकर उपलब्ध करायें जाते हैं। रत्नों की 100% शुद्धता के लिये रत्न के साथ उसकी शुद्धता का सर्टीफीकेट दिया जाता हैं।

शेष पेज 14 **से आगे**.....
की स्थिति उचित स्थान पर न हो तो ऐसी आशंका रहती है कि पता नहीं कब उस घर में न बयान कर सकने लायक कोई घटना घटित हो जाए। घर के उत्तर–पूर्वी कोने को दरकिनार नहीं करना चाहिए क्योकि इसके स्वामी बृहस्पति होते हैं, जिनकी कृपा से घर के स्वामी की समृद्धि ओर कुशलता बनी रहती है।

क्या आप जिस शयनकक्ष में सो रहे हैं, वहां आपके अपने स्वास्थ्य और कैरियर को लेकर कोई परेशानी बनी हुई है, ध्यान दीजिए कहीं आपके घर का रसोईघर या शौचालय उत्तर पूर्व कोने में तो स्थित नहीं है। यह एक बहुत बड़ी भूल होती है। इस भूल का परिणाम लंबे समय तक पूरे परिवार को भुगतना पडता है। घर के स्वामी को हमेशा ख्याल रखना होगा कि घर का उत्तरपूर्व कोना हमेशा खुला रहे और इस कोने मे सफाई होती रहे। वहाँ बत्ती जलाना और धूप आदि जलाना शुभ होता है। इस कोने में झाडू कूडेदान या गंदगी का ढेर परिवार के लिए नुकसानदायक होता है।

उत्तर पूर्व दिशा में परमात्मा का वास भी होता है, इसलिए यदि आप अपना पूजा घर इस कोने में बनाते है तो शुभ फलदायक होता है। इतना करने के बाद आपका घर परिवार हमेशा खुश और सुखी रहेगा । घर में शांति और सम्पन्नता बनाए रखने में फेंगशुई की भी एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

यदि आप समृद्धि तथा सुख की कामना करते हैं तो निम्नलिखित सुझाव अपनाइयेः–

1. नेम एंव फेम कमाना चाहते है तो घर के दक्षिण छोर पर मोर की आकृति या कोई मूर्ति रखें। उसे रखने से पूर्व उसे नमक के पानी से अच्छी तरह धो लें।

2. यदि आप बिजनेस या नौकरी में ऊंचाई प्राप्त करना चाहते हैं तो अपने घर का नंबर प्लेट दरवाजे के ऊपर उचित जगह पर ही टांगे, जहां से वह अच्छी जगह दिखाई पड़े।

3. यदि घर के अंदर ही ऑफिस हो तो ऑफिस के दक्षिण के कोने में एक लाल रंग की मोमबत्ती लगायें और सुन्दर घोडों की अच्छी तस्वीर भी लगा सकते हैं।

4. ऑफिस में बैठने की दिशा दक्षिण पश्चिम की तरफ रखें और कम्प्यूटर को अपने उलटे हाथ की तरफ रखें।

5. ऑफिस की दक्षिण की दिवार पर सुन्दर फूलों तथा ऊंचे पेड़ों की पगडंडियों वाली तस्वीर लगायें। ❋❋❋

शेष पेज 7 से आगे.....

श्रीमद्भागवत गीता का 11वाँ अध्याय रोज स्वंय पढे।

घर में अशांति हो तो रात को कपूर अपने कमरे में रखें और सुबह बाहर जला दें।

अगर लगे कि किसी ने कुछ करा दिया है तो पानी में गंगा जल डालकर नहांऐ। सारे कमरे में गंगा जल डाल दें।

घर में रोज नमक डाल कर पोंछा लगाये।

सदा स्वस्थ बने रहने के लिए रात्रि को पानी किसी लोटे–गिलास में सुबह उठ कर पीने के लिये रख दें। उसे पी कर बर्तन को उल्टा रख दें तथा दिन में भी बर्तन को उल्टा रखने से यकृत संबंधी परेशानियां नहीं होती तथा व्यक्ति सदैव स्वस्थ बना रहता है।

किसी भी रविवार/मंगलवार के दिन फिटकरी का टुकड़ा बच्चे के सिरहाने रख दें। बच्च बुरे स्वप्न के प्रभाव से दूर रहकर आराम से सो सकेगा।

यदि बच्चा अकारण रोता रहे तो कहीं से बकरी की मैंगनी ला कर बच्चे के सिरहाने रख दें। ऐसा करने से बच्चा रात भर आराम से सोएगा तथा बिना वजह उठकर अपनी मां को परेशान नहीं करेगा।

सिर दर्द होता हो तो चंदन और केसर का तिलक रोगी के सिर पर लगाएँ।

सदैव पूर्व या दक्षिण दिशा की ओर सिर रख कर सोना चाहिए। सोने की दिशा पर उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव का गहरा प्रभाव पड़ता है। दक्षिण दिशा की ओर सिर कर के सोने वाले व्यक्ति में चुंबकीय बल रेखाऐं पैर से सिर की ओर जाती हैं जो अधिक से अधिक रक्त खींच कर सिर की ओर लाएंगी जिससे जातक विभिन्न रोगों से मुक्त रहता है। और अच्छी निद्रा प्राप्त करता है।

घर में नित्य घी का दीपक जलाना चाहिए। दीपक लगाते समय लौ पूर्व या दक्षिण दिशा की ओर हो या दीपक के मध्य में बाती लगाना शुभ फल देने वाला है। इसी प्रकार कपूर से बीमारियां, दुःस्वप्न नहीं आते। पितृ दोष का नाश होता है और शांति बनी रहती है।

बच्चे के अत्यधिक रोने तथा नींद न आने से किसी भी बृहस्पतिवार को एक फिटकरी का टुकडा सफेद कपड़े में बांधकर सफेद धागे से बच्चे के गले में बांध दें, तो बच्चा सुखपूर्वक सोएगा।

❋❋❋

हमारे यहाँ रत्नों को लैब से टेस्टेड **(Lab Certified)** कराकर उपलब्ध कराये जाते हैं। रत्नों की **100%** शुद्धता के लिये रत्न के साथ उसकी शुद्धता का सर्टीफिकेट दिया जाता है।

शेष पेज 9 से आगे .....

1. प्रणवयुक्त गणेश जी का संबीज मंत्र सर्वाधिक प्रचलित है यह मंत्र है– **ऊँ गं गणपतये नमः।**

2. वैसे प्रणव **ऊँ** स्वंय ही गणपति रूप है और यह उन्हीं का मंत्र है।

3. गं शब्द के दोनों और प्रणव लगा देने से जो मंत्र बनता है वह गणेश जी का प्रणव सम्पुटित बीज मंत्र कहलाता है–

4. गणेश जी के नाम मंत्र भी उपलब्ध हैं इनमें से द्वादशाक्षर मंत्र है **ऊँ नमो भगवते गजाननाय**। सप्ताक्षर मंत्र है– **श्री गणेशाय नमः**। अष्टाक्षर मंत्र है **ऊँ श्री गणेशाय नमः।**

संतकवि तुलसीदास जी द्वारा रचित गणपति की स्तुति जो विनयपत्रिका में है, वह भी मंत्र का काम करती है

आजकल प्रायः प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में ऋण से परेशान है। अतः ऋण मुक्ति गणेश स्त्रोत का नियमित पाठ करने से धन आगमन बना रहता है और व्यक्ति कर्ज से मुक्ति पा लेता है तथा उसे भविष्य में ऋण लेने की आवश्यकता ही नहीं पडती है। पाठक इससे अवश्य लाभ उठावें।

भगवान गणपति अपने पिता भगवान भोले शिव के समान ही आशुतोष हैं। वे शीध्र प्रसन्न होते हैं और अपने भक्तों के हर मनोरथ एंव हर कार्य को पूरा करते है। आइये, उनका गुणगान करें।

ऋण मुक्ति गणेश स्त्रोत

विनियोग

ऊँ अस्यश्री ऋण विमोचन महागणपति स्तोत्रमंत्रस्य शुक्राचार्य ऋषि ऋण विमोचन महा गणपति देवता अनुष्टुप छन्दः ऋण विमोचन महागण पति प्रीत्यर्थे जपे विनियोग।

स्त्रोत

ऊँ स्मरामि देव देवेशं वक्रतुण्डं महाबलम्।
षडक्षरं कृपासिन्धुं नमि ऋणमुक्तये।।
महागणपति बन्दे महासेतुं महाबलम्।
एक मेवाद्वितीयं तु नमामि ऋणमुक्तये।।
एकाक्षरं त्वेकदन्तमेकं ब्रहम् सनातम्।
महाविघ्न हरं देव नमामि ऋण मुक्तये।।
शुक्लाम्बरं शुक्ल वर्ण शुक्ल गन्धानुलेपनम्।
सर्वशुक्लमयं देवं नमामि ऋणमुक्तये।।
रक्ताम्बरं रक्तवर्ण रक्त गन्धानुलेपनम्।
रक्त पुष्पै पूजमानं नमामि ऋणमुक्तये।।
कृष्णाम्बरं कृष्णवर्ण कृष्ण गन्धानुलेपनम्।
कृष्णयज्ञोपवीतं च नमामि ऋणमुक्तये।।
पीताम्बरं पीतवर्ण पीत गन्धानुलेपनम्।
पीतपुष्पैः पूज्यमानं नमामि ऋणमुक्तये।।
सर्वात्मक सर्ववर्ण सर्व गन्धानुलेपनम्।
सर्व पुष्पैः पूज्य मानं नमामि ऋणमुक्तये।।
एतद् ऋण हरं स्तोत्रं त्रिसंध्यं यः पठेन्तरः।
षठ्मासाभ्यन्तरे तस्य ऋणच्छेदो न संशय।।❋❋❋

पूजा के यंत्र-तंत्र-रुद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)

रूद्राक्ष माला
रूद्राक्ष माला (मध्यम)
रूद्राक्ष माला छोटे दाने
रूद्राक्ष- स्फटिक माला
स्फटिक माला छोटी
स्फटिक माला बड़ी
लाल चंदन माला, हल्दी की माला
कमल गट्टे की माला

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र
स्फटिक लक्ष्मी, स्फटिक गणेश
स्फटिक शिव लिंग
स्फटिक बॉल बड़ा
स्फटिक बॉल छोटी

मिश्रित सामिग्री

नवरत्न ब्रेसलेट
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)
नवरत्न अंगूठी
काले घोड़े की नाल असली
काले घोड़े की नाल का छल्ला
श्वेतार्क गणपति
इंद्रजाल, बृहमजाल
गोमती चक्र, नाभि चक्र

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम
गणेश शंख एवं लक्ष्मी शंख

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच

रूद्राक्ष

सिद्धएकमुखी (गोल दाना)
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग, पारद श्री यंत्र

पिरामिड

पिरामिड (पीतल)
पिरामिड छोटे (पीतल)
कार पिरामिड
स्टडी टेबल पिरामिड

तांत्रिक वस्तुयें

तांत्रिक नारियल
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी
गऊ लोचन
एकाक्षी नारियल

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट, समृद्धि पेड़
लाफिंग बुद्धा, क्रिसटल बॉल
ग्लोब, पिरामिड शुभ-लाभ
लुक, फुक, साहू
लवबर्ड, कछुआ
तीन टांग का मेंढ़क

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं।
500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262